Q. Explain the Economics welfare definitions Critically ?

9771387336

Ans.- किसी भी विकासात्मक सामाजिक विज्ञान को परिभाषा की परिधि में बाँधना एक दुष्कर कार्य है। उसमें भी अर्थशास्त्र जैसे विकासात्मक सामाजिक विज्ञान को जो मानव जैसे चिन्तनशील प्राणी के आर्थिक क्रिया-कलापों का अध्ययन करता है, उसे परिभाषा में परिमित करना तो और भी कठिन हो जाता है। इसी लिये श्रीमति बारबरा उटन (Barbara wootton) ने अपनी पुस्तक "Lament for Economics" (P-12) में साफ शब्दों में कहा है कि – जहाँ कहीं भी छः अर्थशास्त्री होते हैं, वहाँ सात विभिन्न मत होते हैं।

whenever six economists are gathered, there are seven different opinions. इसी प्रकार Prof. J. N. Keynes ने अपनी चर्चित पुस्तक "The Nature and Scope of Political Economy" में जोर देते हुए कहा है कि "विभिन्न परिभाषाओं से अर्थशास्त्र ने अपना गला घोंट डाला है। इसी आधार पर, Doble, Comte आदि अर्थशास्त्री परिभाषा के चक्कर में पड़ना ही नहीं चाहते। उनका मत था कि परिभाषा का अध्ययन प्रारम्भ में नहीं होना चाहिए। इसी कारण से, A Text Book of Economic Theory – Prof. Stonier and Hague और Theory of Price – Prof. Stigler तथा Modern Micro Economics – A. Koutsoyiannis इन तीनों ही अर्थशास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तकों में परिभाषा का अध्ययन नहीं है परन्तु इन सभी मतों के बावजूद जिस तरह से सुनिर्मित भवन के लिए सुनिश्चित चारदीवारी की आवश्यकता होती है, उसी तरह से किसी भी सुव्यवस्थित शास्त्र के अध्ययन के लिए, सुनिश्चित परिभाषा की जरूरत होती है। क्योंकि परिभाषा के बिना किसी भी विषय का अध्ययन सम्भव जान नहीं पड़ता।

प्रारम्भ में, अरस्तु (Aristotle), वाणिज्यवादियों में Petty, Mun, Cantillon तथा भारतीय चिन्तक

से कौटिल्य आदि कुछ अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की परिभाषायें दी है जो अब केवल ऐतिहासिक महत्त्व की ही रह गई है। इनमें से किसी भी अर्थशास्त्री ने अर्थशास्त्र का विधिवत अध्ययन नहीं किया, बल्कि इस समाज की अपने-अपने परिस्थिति के अनुसार दूसरे के रूप के प्रति के सन्दर्भ में अर्थशास्त्र की परिभाषा दी है जो निम्नांकित है—

(a) अरस्तु ने अपनी पुस्तक 'Economica' में कहा है कि— "अर्थशास्त्र गृह-प्रबन्ध का विज्ञान है। (Economics is science of household management.) चूँकि उस समय देश में प्रत्यक्ष लोकतंत्र था। इसलिए उन्होंने घर की कार्य-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाने पर बल दिया। उनका मुख्य निशाना प्रत्यक्ष लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करना था। इसलिए उन्होंने अर्थशास्त्र को गृह-प्रबन्ध का विज्ञान कहा।

(b) इसी तरह, वाणिज्यवादियों के अनुसार, अधिक से अधिक निर्यात और कम से कम आयात के द्वारा अधिक से अधिक देश में सोना-चाँदी के भंडार को बढ़ाने की प्रक्रिया का अध्ययन ही अर्थशास्त्र है। उनका नारा ही था — More trade, more gold.

(C) भारतीय चिन्तकों में कौटिल्य ने भी अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में कहा है कि— "राज्य के आय के स्रोतों का अध्ययन एवं राजा-प्रजा के अधिकार एवं कर्तव्य का निरूपण ही अर्थशास्त्र है। इनके समय में देश में मौर्य साम्राज्य था। वे सबल मौर्य राज्य की स्थापना चाहते थे। उनका कहना था कि राजा ही सर्व-सर्वा है। जबकि पोप का कहना था कि हम भगवान के दूत हैं। सब जनता हमारी आज्ञा का पालन करें। कौटिल्य ने राजा को प्रथम स्थान दिलाने तथा अधिक से अधिक अधिकार दिलाने के उद्देश्य से इस ढंग की परिभाषायें अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में दी।

इन सभी तर्कों के बावजूद आज अर्थशास्त्र का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि उसे सिर्फ science of household management कहने से काम नहीं चलेगा। वैज्ञानिक खोज और तकनीकी के विकास ने विश्व को छोटा कर दिया है। अब लोग दूसरे ग्रह पर भी

शास्त्रीय परिभाषा की आलोचनाओं को ध्यान में रखते हुए इसमें क्रान्तिकारक संशोधन एवं परिवर्तन के बाद जिस परिभाषा का विकास हुआ, उसे हम नव शास्त्रीय परिभाषा के नाम से जानते हैं। यह शास्त्रीय तो है ही, क्योंकि धन को अध्ययन का विषय यह परिभाषा भी मानती है किन्तु यह नव है क्योंकि यह धन के अतिरिक्त मानवीय कल्याण को भी अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु मानता है। नव शास्त्रीय परिभाषा में हम मुख्य रूप से Marshall एवं उसके समर्थक Prof. A. C. Pigou, Prof. Cannon, Prof. Beveridge और Prof. Ely की परिभाषा को सम्मिलित करते हैं। इसे मार्शलवादी (Marshallian) परिभाषा भी मानी जाती है, क्योंकि इस परिभाषा के प्रथम प्रतिपादक Prof. Alfred Marshall थे। इसे कल्याणवादी परिभाषा भी कहा जाता है। क्योंकि इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान कल्याण की धारणा को दिया गया है। मार्शल के ही शब्दों में,

"Thus it is on the one side, a study of wealth and on the other and more important side a part of the study of man."

Prof. Marshall की ही परिभाषा के साथ अर्थशास्त्र का नाम Political economy से हटकर Economics शुरू हुआ। Marshall ने अपनी विश्वप्रसिद्ध क्रान्तिकारी पुस्तक Principles of Economics (1890) की प्रथम पंक्ति में ही कहा है कि —

"Political Economy or Economics is the study of mankind in the ordinary business of life."

इसी तरह, Prof. A. C. Pigou ने अपनी पुस्तक Economics of Welfare में मार्शल की परिभाषा का समर्थन करते हुए कहा है कि — "Our range of enquiry is limited to the part of social welfare which can be brought directly or indirectly into the measuring rod money."

दूसरे शब्दों में — हमारी परीक्षा की जाँच सामाजिक कल्याण के उस अंश तक सीमित रखा है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी मापदण्ड से मापा जा सके।

इसी तरह, Prof. Cannan के अनुसार, "Economics is the study of causes of material welfare".

इसीप्रकार, Beveridge का भी कहना है कि— "Economics is the study of the general methods by which men co-operate to meet their material needs."

Prof. Ely ने भी अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुए कहा है कि — "Economics is the science which treats of those social phenomena [illegible] -wing activities of man".

J.N. Keynes के अनुसार भी, "The science which treats of the phenomena arising out of the economic activities of mankind in society".

इसप्रकार, इन सभी अर्थशास्त्रियों ने मार्शल की परिभाषा का ही अनुसरण किया है। इसतरह हम देखते हैं कि मार्शल ने जो कल्याणवादी परिभाषा दी है, उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

(A) यह परिभाषा मानव-क्रिया को दो भागों में बाँटती है। (i) आर्थिक क्रिया और (ii) गैर-आर्थिक क्रिया। आर्थिक क्रिया वह है जिसे हम मुद्रा रूपी मापदण्ड से माप सकते हैं तथा गैर-आर्थिक क्रिया वह है, जिसे मुद्रारूपी मापदण्ड से नहीं मापा जा सकता। उदाहरण के लिए, एक फुटबॉल खिलाड़ी जब पैसे लेकर खेलता है तो वह

दूसरे शब्दों में — [illegible] परिभाषा की जाँच सामाजिक कल्याण के उस अंश तक सीमित रखा है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी मापदण्ड से मापा जा सके।
इसी तरह, Prof Cannan के अनुसार,
"Economics is the study of causes of material welfare".

इसी प्रकार, Beveridge का भी कहना है कि —
"Economics is the study of the general methods by which men co-operate to meet their material needs."

Prof. Ely ने भी अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुए कहा है कि — "Economics is the science which treats of those social phenomena [illegible]
-using activities of man".

J. N. Keynes के अनुसार भी "The science which treats of the phenomena arising out of the economic activities of mankind in society".

इसप्रकार, इन सभी अर्थशास्त्रियों ने मार्शल की परिभाषा का ही अनुसरण किया है।
इसतरह हम देखते हैं कि मार्शल ने जो कल्याणवादी परिभाषा दी है, उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

(A) यह परिभाषा मानव-क्रिया को दो भागों में बाँटती है। (i) आर्थिक क्रिया और (ii) गैर-आर्थिक क्रिया। आर्थिक क्रिया वह है जिसे हम मुद्रा रूपी मापदण्ड से माप सकते हैं तथा गैर-आर्थिक क्रिया वह है, जिसे मुद्रारूपी मापदण्ड से नहीं मापा जा सकता। उदाहरण के लिए, एक फुटबॉल खिलाड़ी जब पैसे लेकर खेलता है तो वह

आर्थिक क्रिया हुई, किन्तु जब वही खिलाड़ी मैदान में अपने मनोरंजन के लिए फुटबॉल खेलता है, तो वह गैर-आर्थिक क्रिया हुई।

(B) यह कि सामान्य जीवन के सामान्य क्रिया कलाप का अध्ययन करता है। यह जंगल में रहनेवाले साधु-सन्तों या निर्जन टापू में रहनेवाले Robinson Crusoe या पागल अथवा शराबी के आर्थिक क्रिया-कलापों का अध्ययन नहीं करता।

(C) यह सामाजिक विज्ञान है। समाज से बाहर रहनेवाले व्यक्ति का यह अध्ययन नहीं करता।

(D) यह वास्तविक और सामान्य व्यक्ति का अध्ययन है। Adam Smith के समान Economic man का नहीं।

(E) अर्थशास्त्र धन और भौतिक कल्याण दोनों का अध्ययन करता है। Prof. Marshall के ही शब्दों में — " धन साधन है और साध्य है मानवीय कल्याण। मार्शल के अनुसार ही धन से अधिक महत्वपूर्ण मानव है।

(F) अर्थशास्त्र की अध्ययन विधि निगमन और आगमन दोनों है। जैसे मनुष्य के चलने के लिए दायें और बायें दोनों पैर की आवश्यकता है, उसी तरह इन दोनों के बिना अर्थशास्त्र अपूर्ण है।

(G) अर्थशास्त्र वास्तविक तथा आदर्शात्मक दोनों विज्ञान है। वास्तविक विज्ञान के रूप में यह धन उपार्जन के माध्यम का अध्ययन करता है, जबकि आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में उस धन का उपभोग मानवीय आर्थिक कल्याण में करने का मार्ग प्रदर्शित करता है। जैसा कि Pigou ने ठीक ही कहा है कि — Economic is both light giving and fruit bearing.

सन 1930 ई० के बाद, कुछ समय तक ऐसा प्रतीत हुआ कि परिभाषा सम्बन्धी विवादों का निराकरण हो चुका किन्तु सन 1932 ई० में London School of Economics के Prof. Lord Robbins ने अपनी क्रान्तिकारी पुस्तक — "An Essay on the Nature and Significance of Economic Science" में मार्शल की परिभाषा की जमकर कटु आलोचना की और विकल्प में परिभाषा के सम्बन्ध में एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया। संक्षेप में, मार्शल की परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित आधार पर की जाती है :-

(A) मार्शल की परिभाषा वर्गीत्मक है, विश्लेषणात्मक नहीं :→ प्रो० रॉबिन्स ने कल्याणवादी परिभाषा की इस आधार पर भी आलोचना की है कि यह परिभाषा विश्लेषणात्मक न होकर वर्गीत्मक है। मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं के एक निश्चित वर्ग से है, न कि प्रत्येक क्रिया के एक निश्चित पहलू से। मार्शल ने मानवीय क्रियाओं को दो वर्गों में विभक्त किया। (i) आर्थिक तथा (ii) गैर-आर्थिक। लेकिन मानव क्रियाओं के इस वर्गीकरण को प्रो० रॉबिन्स ने तर्कहीन और अवैज्ञानिक करार देते हुए कहा कि — आर्थिक क्रिया का गैर-आर्थिक पहलू भी हो सकता है अतः मानव क्रियाओं का कोई कठोर वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। इनके अनुसार, जहाँ कहीं भी सीमित साधन तथा समयों के द्वारा असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रश्न होगा, वहीं आर्थिक समस्या उत्पन्न हो जाती है। प्रो० रॉबिन्स के अनुसार, मानव क्रियाओं के उस पहलू पर ध्यान देना चाहिए, जो साधनों के दुर्लभता से प्राप्त होता है क्योंकि आर्थिक तथा गैर-आर्थिक क्रियाओं का आधार वस्तुतः दुर्लभता ही है। मार्शल

सन 1890 ई० के बाद, कुछ समय तक ऐसा प्रतीत हुआ कि परिभाषा सम्बन्धी विवादों का निराकरण हो चुका किन्तु सन 1932 ई० में London School of Economics के Prof Lord Robbins ने अपनी क्रान्तिकारी पुस्तक — "An Essay on the Nature and Significance of Economic Science" में. मार्शल की परिभाषा की जमकर कटु आलोचनाओं की और विकल्प में परिभाषा के सम्बन्ध में एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया। संक्षेप में, मार्शल की परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित आधार पर की जाती है :-

(A) मार्शल की परिभाषा वर्गात्मक है, विश्लेषणात्मक नहीं :→ प्रो० रॉबिन्स ने कल्याणवादी परिभाषा की इस आधार पर भी आलोचना की है कि यह परिभाषा विश्लेषणात्मक न होकर वर्गात्मक है। मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं के एक निश्चित वर्ग से है, न कि प्रत्येक क्रिया के एक निश्चित पहलू से। मार्शल ने मानवीय क्रियाओं को दो वर्गों में विभक्त किया। (i) आर्थिक तथा (ii) गैर-आर्थिक। लेकिन मानव क्रियाओं के इस वर्गीकरण को प्रो० रॉबिन्स ने तर्कहीन और अवैज्ञानिक करार देते हुए कहा कि — आर्थिक क्रिया का गैर-आर्थिक पहलू भी हो सकता है अतः मानव क्रियाओं का कोई कठोर वर्गीकरण नहीं किया जा सकता। इनके अनुसार, जहाँ कहीं भी सीमित साधन तथा समयों के द्वारा असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रश्न होगा, वहीं आर्थिक समस्या उत्पन्न हो जाती है। प्रो० रॉबिन्स के अनुसार, मानव क्रियाओं के उस पहलू पर ध्यान देना चाहिए जो साधनों के दुर्लभता से प्राप्त होता है क्योंकि आर्थिक तथा गैर-आर्थिक क्रियाओं का आधार वस्तुतः दुर्लभता ही है। मार्शल

(E) अर्थशास्त्र साधन का अध्ययन करता है, साध्य का नहीं। यह उद्देश्यों के बीच तटस्थ रहता है अर्थात यह वास्तविक विज्ञान है, आदर्शात्मक नहीं। जबकि मार्शल ने इसे वास्तविक और आदर्शात्मक दोनों विज्ञान माना है। मार्शल के अनुसार, यह निर्णय लेना पड़ता है कि मानव कल्याण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्या करना उचित है और क्या अनुचित। लेकिन रॉबिन्स ने यह बतलाया है कि उचित-अनुचित का निर्णय लेना अर्थशास्त्र का काम नहीं है। यह एक यथार्थवादी विज्ञान है और उद्देश्यों के बीच तटस्थ है।

(F) अर्थशास्त्र प्राकृतिक विज्ञान के समान पूर्णतः विश्लेषणात्मक विज्ञान है। अतः इसकी अध्ययन विधि सिर्फ निगमन है, आगमन नहीं। अर्थशास्त्र Abstract science है, Reals या Concret events से कोई मतलब नहीं, यह तो [illegible] choice है। यह [illegible] चयन का विज्ञान है।

इस तरह, हम देखते हैं कि Robbins तथा उनके अनुयायियों ने Marshall की परिभाषा की कटु आलोचना करते हुए इसे धाराशाही कर दिया। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं होता कि आज मार्शल की परिभाषा पूर्णतः अप्रासंगिक हो चुकी है। रॉबिन्स और मार्शल की परिभाषा एक-दूसरे की पूरक मानी जाती है। आज भी Welfare micro economics, Economics की एक महत्वपूर्ण अंग है। अतः मार्शल की परिभाषा की ~~प्रासंगिकता~~ प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है।